

'एक और नंगा आदमी' : अकविता संकलन; सतीश जमाली ।।

लेखक [६३, माडल टाऊन, सोनीपत (निकट देहली)] द्वारा प्रकाशित ।।
मुद्रण : परूथी प्रिन्टिंग प्रेस, सोनीपत (निकट देहली) ।।
कला : कृष्ण खन्ना (अकविता—५ से पुनर्मुद्रण) ।।
प्रथम संस्करण : मार्च १९६७ (केवल ४०० प्रतियां) ।।
मूल्य : सजिल्द २.५० रुपये, अजिल्द २.०० रुपये ।।

EK AUR NANGA ADMI

Anti Poems by SATISH JAMALI



६० के पश्चात के कहानीकारों में विख्यात, लिखना प्रारम्भ किया ५४ से, इसी बीच दो वर्ष तक विदेश-भ्रमण, 'सरिता' में कुछ मास, सम्प्रति एक औद्योगिक प्रतिष्ठान से सम्बद्ध, तथा द्वैमासिक अकविता-संकलन 'अकवि' का सम्पादन, अविवाहित, बी. ए., जन्म—१७.८.१९४०।

शिलालेख

धूप की बू कमरे में फैल गई है कमरे में आने के
बाद। इस बारहसिंगे के यदि गर्भ कर दूं मैं
बारहसिंगा ही क्या होगा पैदा। सूअर
का गोश्त होता है बहुत मोटा
चबाने में लगती है देर, खाने में नहीं
आता मज़ा।
खनन—न
अब बेरा को टिप नहीं मिलेगा—
किसी ऊपर की मंज़िल पर बैठ औरतों को सड़क
क्रास करते देखना—
औरत एक बेवकूफ़ क़ौम है।
स्टाप
वेट
गो
पार्क में घुसती आती हैं लोगों की भेड़ें, कारों
की दौड़ती जाती हैं बूढ़ी पंक्तियां
इमारतें ठहर कर पढ़ती हैं सड़कों का मृत-इतिहास
हर चेहरे पर अंकित है एक लम्बा अहमक़ाना जलूस—
सर भोलानाथ
वाइन
कोल्ड बियर
वेटर, सलाद। गांजा, भांग,
चाय-घरों के फ़र्शों पर अधलेटे हैं बीटनिक।
गांधी भी था बीटनिक। था। एक छिपकली सड़क
के बीच में फंसकर मर जाती है। आत्म—
हत्या। डी० एल० एफ़० ६३७६। पंखा बन्द होगया है।
राजेन्द्रसिंह ने कहा भी था, पहाड़ चले जाओ।
वह ठंडे पानी के गिलास से तर करता है अपने बाल
बेरा उसे समझता है पागल। बूट-पालिश
वाले इस समय चले जाते हैं।

न्योन-बत्तियां । बालूजा । बोल्गा । बी० ग्रो० ए० सी० ।
इंगलेंड । बगदाद । ग्रफ्रीका । केनेडा । ग्रमरीका ।
ग्रमरीका एक दिन समुद्र में डूब जायेगा ।
किताब में लिखा है ।

महाहास

११८४ खम्भे, ३६२ छतें, ७१८ दीवारें,
१८१३ खिड़कियां, ६२५ दरवाज़े,
२४३ गलियारे, २७१ बरामदे, ३०१७ सीढ़ियां,
६२० पलंग, ७२०० ट्यूबलाइट्स, १६१०० कुर्सियां,
११०० मेज,
२२ रंग,
१३४ कॉरीडोर, ३५६ शौचालय, १६८ गेराज,
७२ सड़कें, १४४ फ़ुटपाथ, २३ पार्क,
१४ खेल के मैदान, ६७ बस-स्टाप,
६०००० कारें, ६३ पब्लिक पेशाब घर

इस तमाम मलबे को रौंदते हैं
सीमेंट-लोहा-शीशा-पत्थर-शहर ढोते हुये लोग
५० करोड़

ग्रस्वीकृति

वह नालियों में पड़े सिकुड़े हुये एफ० एल०
तलाशता है ।
उनके मिल जाने पर
वह दोनों हाथों से बार-बार रगड़ता है
ग्रपना लाल-लाल मर्द । बारासिंगा ।

वह सब स्त्रियों को पाता है नग्न ।
वह सब स्त्रियों की योनियों पर गर्म शराब उंडेल कर
उन्हें चाटना चाहता है ।
वह सब स्त्रियों की छातियों को रौंदना चाहता है

क्योंकि उसे चाहिये इन छातियों में सोने के लिये एक
क़ब्र ।

वह नगर के चौक में आकर हो जाता है खड़ा ।
और धीरे-धीरे अपने सब कपड़े उतारता है ।
बच्चे उसके नक्शे को देखकर होते हैं हैरान ।
मर्द उसके खिलाफ़ सभी अख़बारों में छपवाते हैं
पत्र ।
स्त्रियां उसकी नग्नता को देखकर डरती हैं, (कांपती हैं), (भागती हैं)
और नगर की सड़कों पर कोई स्त्री नही आती नज़र ।
वह इन सब स्त्रियों को जानता है
जो हर रात अपने मर्दों के बिस्तरों पर सोती हैं
नग्न ।

वह नगर के चौक में आकर हो जाता है खड़ा ।
चीख़ता नहीं, चिल्लाता नहीं
केवल अपनी पीठ है बजाता अपनी दोनों टांगों से ।
बिजली की तारों पर लटकते हुये आते हैं उसके पास
उसके मित्र ।
तब मकान हो जाते हैं बन्द
सड़कें हो जाती हैं गुम
कहीं भी कोई हार्न सुनाई नहीं देता ।
सारे नगर में अब होगी आम हड़ताल ।

नगर-मृत्यु

छत्तीस हज़ार मकानों का शहर, प्रत्येक
मकान की ग्रन्थियां निजी । तुम
ऊपर की बर्थ पर चले जाओ, यहां
चिंघाड़ो मत । मेरा बाप
मेरी मां को पसन्द नहीं करता अब
मेरी मां अब

बहुत बूढ़ी होगई है, होगई है ।
क-ख-ए०-बी०-सी०-डी०-ई०-ई०—
छत पर खड़े होकर वह देखता है
उसने उठा रखा है सूर्य का हीटर
ग्रौर उसके सारे वस्त्र हैं जलते जा रहे ।
मोमबत्तियां बनाने का क़ाम ग्रासान
है, ग्रौर ग्रच्छा है
तुम यह कर भी लोगे ।
ग्राज तिथि १७ है, मास ग्रगस्त—
वह
शहर के चौक
में उतर कर मां-बहिन की गालियां बकता रहा ग्रपने
जूतों को
ग्रौर जेब से एक पैसा निकाल उसने दूर फैंका ।
जब उसकी बीवी पेशाब किया करती है
तो वह निकट में कहीं छिप
कर, श्-शी - ी—ी—ी, श्-शी—ी—ी—ी ी
ग्रावाज़ सुना करता है ।
मेरे सामने की मेज़ पर का बाबू
काग़ज़ों ग्रौर फ़ाइलों में हर समय
खोये रहने का
किया करता है प्रयास ।
शूं-ऊं, हूँ-हूँ, शूंऊं, हूँ-हूं-हूँ—
कनाट-प्लेस के मध्य में खड़ा
वह एक काग़ज़ पर लिखता
है कि,
ग्रगले मंगलवार को वह कर लेगा ग्रात्महत्या ।
ग्रौर काग़ज़ को फाड़कर फैंक देता है दूर ।
एक बटा तीन,
तीन बटा पांच,
पांच ग्रौर सात,
छः, ग्रौर दस———

मानव-योनि

चूहा, बिल्ली, कुत्ता,
हाथी, शेर, रीछ, गेंडा, बारहसिंगा,
लक्कड़बग्घा,
भैंसा, गाय, सूअर,
तीतर, बटेर, कबूतर,
सांप, बिच्छू, अजगर,
बकरा, ऊंट, गधा, घोड़ा,
मक्खी, मच्छर, खटमल, छिपकली,
तोता, मैना, गोरैया, मछली,
हिरण चीता, चील, कौवा
मोर, कठफोर, धौरा, सारस, तिलौरी,
वत्तख, शतुर्मुग, कोयल, नीलकंठ,
उल्लू, गिद्ध, मेंढक, चमगादड़,
बन्दर, मुर्गा, खरगोश, कछुआ मगरमच्छ
और
मैं

एक और नंगा आदमी

गांजा, भांग, अफ़ीम, चर्स, कोकीन, शराब
नहीं। निश्चित।
तुम अपना पेट काट कर अपनी भूनते हो अंतड़ियां
उन्हें कन्धों पे लटका कर उनका चूसते हो खून।
तुम औरत की बग़ल में अपना मूत्र-मार्ग बांधकर ढूंढते हो सकून।
तुम अपने चारों ओर लपेटते हो लावा।
नंगे होकर काफ़ी हाऊस में करते हो प्रवेश
सभी मेज़ों को उल्टा देते हो
सभी शो-रूमों को देते हो तोड़
सभी मानव-हितैषी-अबुद्धिजीवियों के कपड़े देते हो फाड़
तब भागते हैं लोग सड़कों को तोड़ते हुये दूर

कुछ बच जाते हैं
जिनमें तुम बांटते हो अपने खून की एक-एक बूंद ।
तुम कारों को रोकते हो, उनमें लगाते हो आग ।
तुम स्त्रियों के हर झुंड पर फेंकते हो बम ।
हीरामंडी, सोनागाची, जी० बी० रोड पर करते हो क़त्लेआम ।
तुम सुपर-मार्केट की तमाम सीढ़ियां चढ़कर लगाते हो नीचे छलांग
और नहीं मरते
क्योंकि तुम्हें जेम्स-बांड का गोली चलाना लगता है उत्तम ।
तुम हर दफ़्तर में जाकर छोड़ते हो पटाखे
काटते हो नलों का पानी बंद ।
तुम जगह-जगह बिखराते हो अन्न जिससे लाखों हों चूहे पैदा ।
तुम सड़कों पर लगातार फैलाते हो केलों के छिलके ताकि सब के नाक फूटें ।
तुम कुत्तों के गलों में शीशे बांधकर उन्हें सरेआम छोड़ देते हो
तुम्हें चेहरों की मनहूसियत से निहायत घृणा है ।
तुम तमाम गधों को पिलाते हो शराब
सांपों को अफ़ीम
उल्लुओं को चर्स
बिच्छुओं को गांजा
इन सब को अपनी गर्दन पर लाद
उखाड़ते हो रेल-पटरियां ।
तुम भीड़ में से गुज़रते हुये काटते नहीं जेब
बल्कि लूटते हो मकान
भगाते हो स्त्रियां ।
चौकों में बुतों के नीचे नंगे होकर लेटना
तुम्हें नहीं आर्डर
तुम्हारे मित्र हैं इसके विरुद्ध ।
तुम अपने मित्रों सहित बनाते हो हर अंश कोढ़
खाते हो सड़कों की कोलतार ।
तुम टीन के खाली डिब्बे फैंकते हो समुद्र में
पुल बनाकर पहुंचते हो अमेरिका
यू० एन० ओ० बिल्डिंग के ऊपर बैठ फाड़ते हो लिंकन की आत्मकथा

यू० एन० ओ० को बीच में से काट देते हो
फैंकते हो ऊपरी भाग टाईम-स्क्वेयर के ऊपर।
तुम हर नीग्रो की नाक में रस्सी डालकर उन्हें ले जाते हो सन–बाथिंग–स्पाट
और ३७२वीं आर्मंड डिवीज़न फौज से उन पर गोलियां चलवाते हो
और चीखते हो 'स्नाब'–'स्नाब'।
तुम कहते हो तमाम लोग नस्लहीन, (मिक्स्ड–ब्रीड)
किसी न किसी की मां किसी न किसी के बाप के पास अवश्य गई है
तुम केनेडी के शहीद–स्मारक के पास जाकर पूछते हो
तुम्हारा बाप क्या एक ही था।
तुम के०-के०-के० ग्रुप का बुलवाते हो सम्मेलन
सभी मारि-जुआना खाने वालों का करवा देते हो वध।
तुम गेंडे पर होकर सवार
बकिंघम पेलेस की सभी दीवारों पर लिख देते हो—'सफेद चमगादड़'।
तुम ट्रफ़लगढ़ –बुत पर चढ़ते हो ऊपर
फैंकते हो भीड़ पर कच्चे टमाटर,
वेस्टमिनिस्टर—एब्बी में करते हो स्मगलरों को आमंत्रित
सारे ताबूतों को उखाड़ उनमें भर देते हो स्मगलिंग का माल।
तुम मेट्रोपोलिटन—हेडक्वार्टर्स को करवा देते हो चार घंटे बंद
और रेप, चोरी, डाका, क़त्ल, अग़वा, एकसीडेंट की
होती हैं १५३००४८३ घटनायें
७०६९१४ मर जाते हैं लोग।
तुम हाईड पार्क, पिकाडली सर्कस, रायल फ़स्टीवल हाल, मेफ़ेयर,
आक्सफ़ोर्ड—स्ट्रीट में बिखरा देते हो अरबों खटमल
तब एक घंटे में करते हैं नव्वे हज़ार लोग आत्महत्या।
तुम ईफ़ल—टावर पर से अकस्मात तमाम बीटनिकस, राक्स एंड
माड्स, तथा हंगरी—जेनेरेशन के नेताओं को फेंक देते हो नीचे।
तुम तमाम नाईट—क्लबों से सभी लड़कियों को ट्रंकों में बंद
कर डुबो देते हो इंगलिश–चेनल में
और हज़ारों आदमी पागल होकर आपस में टकरा मर जाते हैं।
तुम रेड-स्कवेयर में तमाम सुन्दर युवतियों से करवाते हो २२ घंटे परेड
और फिर बोरियों में बंद कर उन्हें रेड इंडियन्स के पास

मेक्सिको छोड़ आते हो ।
तुम वियतनाम युद्ध में घुसकर
मरी हुई फ़ौजी औरतों के खाते हो स्तन काट-काट ।
तुम पीकिंग रेडियो-स्टेशन में घुसकर ज़बर्दस्ती
इस शताब्दी के तमाम लोगों को कह देते हो मूर्ख ।
तुम न्याग्रा-फ़ाल्स पावर-स्टेशन को गिरा देते हो एटम छोड़कर
दो करोड़ लोग मर जाते हैं सिविल-वार समान आपस में टकरा कर ।
तुम ४८वीं-स्ट्रीट के एक स्काई-स्क्रेपर को फूंक देते हो
मलवे के बोझ पर खड़े होकर देते हो तमाम बच रहे लोगों को गालियां ।
तुम बुद्धं शरणं गच्छामि के देश पर से उड़ जाते हो
करोड़ों भूखे लूलों को पिलाते हो समुद्रों का खारा पानी ।
तुम म्यूनिक के ९५१ फुट ऊंचे टेलिविज़न-टावर पर बैठ
हवायों में फैंकते हो तोप के गोले ८३०
जिससे होती है लगातार २४ दिन बारिश
नगर की सारी इमारतें दूर-दूर बह जाती हैं ।
तुम होनोलुलु की तमाम सुन्दर कुमारियों को
लोहे के डंडों से बांधते हो उलटा
उन्हें आग की उबलती लपटों पर बांध आते हो ।
तुम डाका, अग़वा, चोरी, बम फैंकना, गोली चलाना,
    जूया, स्मगलिंग, क़त्ल, छुरा घोंपना
इन सब की तरक्की के लिए खोलते हो
७०००००४००००००००० ६३३७१ इंटर्नेशनल-क्राईम-इन्न्ज़ ।
तुम रंगून के लोगों में बांटकर बंदूकें
    करवाते हो हकूमत के विरुद्ध बग़ावत
    लूटमार, शाह को क़त्ल करवा देते हो ।
तुम सेंट-पीटर्स-केथेड्राल में घुसकर तमाम लोगों को भर लेते हो ट्रकों में
ट्रकों को सान-फ्रांसिस्को पुल पर छोड़कर पुल को लगा देते हो आग ।
तुम दुनियां के तमाम चांडालों को पिलाकर दरयाई-घोड़ों का खून
बर्लिन की दीवार को ५० फुट और करवा देते हो ऊंचा
तुम एफ़. बी. आई.-सी. आई. ए. के तमाम एजंटों को देकर रिश्वत
दुनिया के सभी लोगों के कटवा देते हो सर के बाल ।
तुम दुनियां के तमाम दार्शनिकों को श्वेडा-गोनपेगोडा ले जाते हो

जहां केसियस क्ले उर्फ मुहम्मद अली उनके घोंट देता है गले।
तुम उन तमाम युवतियों को जिन्हें सिफ़िलस हो गया है
कलीमानज़ारों पर ले जाते हो
अपने मित्रों के कुत्ते छोड़ते हो उन सब पर।
तुम कितने ही नगर उठाकर फैंकते हो जिब्राल्टर में
केरो-रोम के ऐतिहासिक-अवशेषों में भर देते हो सांप
मियामी-बीच को मध्य में से काटकर सारे देश में
फैला देते हो समुद्री पानी
गोगां, पिकासो के चित्र दबवा देते हो पिरामिडों में
ताल्स्ताय, शेक्सपियर, हेमिंग्वे की रचनायें जलाते हो चौकों में
कालाहारी-पेटेगोनिया-मरुस्थल उठाकर फैंकते हो वायुयानों पर।
तुम म्यूनिक से पीकर १५० बोतल बियर, केम्बरले, जोन्सबर्ग,
कुलगार्डी, कालगुर्ली, एमस्टरडम के तमाम सोना और हीरे
तराशने वालों पर छोड़ देते हो टांगानीका के तमाम
शेर और छः हज़ार हाथी।
बाकू, आर्केंज़ल, क्वेत, बुडापेस्ट के लकड़ी-पेट्रोल-गेहूं के
कूओं-ढेरों में फैंकते हो जलती-नंगी-मशालें
और केमरून पर्वत पर बैठ दक्षिणी-ध्रुव की व्हेल-मछली
के तेल से अपने पट्ठों पर करवाते हो मालिश
वार्सा के ७५ लाख सूयर स्विटज़रलैंड की तमाम रेल-सुरंगों
में भर देते हो, सुरंगों को दोनों ओर से देते हो गिरा,
और क्लार्क-होटल के डांसिग-फ़्लोर पर खड़े होकर
बजाते हो २३० बार ताली
राईन, डेन्यूब, डान, पो, वाल्गा, मिससिसपि, नील, कांगो, जेम्बज़ी,
नाईज़र, विक्टोरिया, अल्बर्ट, एडवर्ड, न्यासा, चाड, रोडल्फ़,
सुपीरियर भीलों-नदियों-दरयायों में मिला देते हो ६०
अरब टन पोटेशियम-सायनायड
न्यू साऊथ वेल्ज़—क्वींज़लेंड की तमाम भेड़ें विक्टोरिया-फ़ाल-
स्टेनले जल प्रपात में देते हो बहा
और मांटरियाल से शंघाई तक हर बार उड़ते हुये पीते
हो रायोडीजानीरो का क़हवा
तुम भूमध्य-रेखा को उखाड़ कर फेंकते हो टुंड्रा-खंड के ऊपर

तमाम रेंडियर तथा एस्कीमोज़ को अपनी पीठ से बांध
एलास्का से तेहरान, जावा, बरमिंघम, अदन, बसरा,
स्टालिनग्राड, नेरोबी, क़ाबुल, ढाका तक दौड़ते हो,
तब एपीनायेन-एल्प्स पर्वतों से उन्हें फैंकते हो अंध-
महासागर में (बहुत अंदर)
मेलबोर्न यूनीवर्सिटी के छात्र अपने हाथ हवाओं में लहराते हैं।
तुम हडसन दरिया पर बनाते हो न्यूयार्क की ४८ लाख लाशों का पुल
उस पर चढ़, गिराते हो बोल्डर और ग्रांड-कूली डेम
सोफ़िया के तमाम गुलाब के फूलों के बीच छोड़ देते
हो ल्यूपोल्डविल के जंगली ज़राफ़
हिरोशिमा-नागासाकी में राष्ट्रपति जानसन से गिरवाते हो
दो और एटम-बम
जाफ़ेन्डास को भेजकर करवाते हो प्रधान मंत्री
हेंडरीक-वरवुर्ड का क़त्ल
नेशनल-म्यूज़ियम के तमाम जलवा देते हो धार्मिक-ग्रन्थ।

तुम्हारे मित्र हैं तुमसे सहमत।

नींद

नींद
नीद नींद
नींद नींद नींद
नींद नींद नींद नींद
नींद नींद नींद
नींद नींद
नींद
नींद !

विनाश एक सम्भावना है

वह नालियों से गन्दे कीड़े निकाल

उन्हें देता है पनाह अपने सर पर ।
पेशाब अपना पीता है आठ समय हर दिन ।
वह गिन्सबर्ग के दोनों हाथों—दोनों टांगों
पर ठोंकता है कीलें,
गिन्सबर्ग को बनाता है मसीह ।
वह तमाम काम करने वाली औरतों के गर्भ काट देता है ।
वह खोये हुए बच्चों को ढूंढकर उनका खाता है मांस ।
वह वियतनाम युद्ध में मरे शवों के उतारता है लिंग,
पहनता है लिंग-माल ।
वह तमाम युवतियों की टांगों को काट-काट कर भर लेता है
अपना कमरा ।

श्मशान-भूमि में जाकर कच्ची शराब से नहाता है ।
चाटता है मुर्दों का खून ।
कुत्ते, सूयर, चीलें, कौवे, उल्लू, विच्छू, सांप
आते हैं उसके पास ।
वह नगर के सेंटर में आकर हो जाता है खड़ा ।
सभी आती-जाती कारों को करता है पंक्चर,
सभी जवान युवतियों को कारों से निकाल उनकी
खींचता है आंखें,
सभी जवान युवतियों को मेन-होल में गिराता जाता है ।
जलूस का तीसरा-महायुद्ध बढ़ता है आगे,
टूटती हैं सड़कें,
गिरते हैं मकान,
लेनन, लिंकन, चर्चिल के हवायों में उड़ते हैं
पिंजर ।
वह मलबे के ढेरों में पहचानता है मृत-स्त्रियों के शव
वह मृत-स्त्रियों को अपनी टांगों में कसकर उनका
करता है भोग ।
खाता है अपनी टट्टी ।
पीता है पेशाब ।

ाह अपने ग्यारह हज़ार-आठ सौ किलो मीटर लम्बे नाखुनों से जमीन
ख़रोंचता है,
ामुद्रों का सारा पानी भर लेता है नाखुनों में ।
ाह एम्पायर-स्टेट-बिल्डिंग पर बैठा न्यूयार्क की तंग सड़कों पर
हज़ारों 'रेप' होते देखता है ।
ाह बर्टरेंड-रस्सल को दार्शनिकता को नाक है चिढ़ाता ।
ाह तंग गुफ़ा-कमरों में लड़कों-मर्दों को एक-दूसरे में कसे है देखता ।
ाह एक बूढ़ी औरत की सड़ी योनि पर से चुनता है मक्खियां
उन्हें चबाता है ।
ाह तमाम कूयों-झीलों में मिला देता है विष ।
ाह विश्व के सभी वृक्षों को लगाता है आग ।
ाह लाखों लोगों को आत्महत्या करने पर करता है मजबूर ।
ाह सिलाखें तोड़ देता है
खड़कियां उखाड़ फैंकता है अपनी छाती के बालों पर
ाह अपनी नाक चिपका देता है उल्टी छत की कड़ियों के साथ
ाह नंगा हो सारे कमरे की दीवारों से लिपटता है ।
ाह एक फूंक में हज़ारों अकाल उत्पन्न करना चाहता है ।
ाह चाहता है सब तरफ उसको सिर्फ़ मुर्दे मिलें ।
ाह चाहता है सारे देश समुद्रों पर तैंर कर आपस में टकरा जायें ।
ाह चाहता है ज़बर्दस्त भूकम्प हों
ागह-जगह से ज़मीन फ़टे
ारे मकान धंस जायें
ıe wants—TOTAL ANNIHILATION
ıe wants—TO RAISE THE HELL

आत्म-भोग

ाईवाड़ा के ज्योतिषाचार्य ने कहा
त्री का भोग तुम्हारे हाथ पर नहीं
र्ज

वह दफ़्तर के तेरह पंखों पर आठ घंटों
तक लगातार रहा थूकता ।
उसने दफ़्तर की हजारों फ़ाइलों पर स्त्रियों
के नंगे चित्र बनाये ।
उसने दफ़्तर की चारों दीवारों-शीशों
पर न कहे जाने वाले लाखों
शब्द दिये टांक ।
उसने २५७४ वर्ष पूर्व पैदा होने वाले अपने पिता
को मां-बहन की गालियां दीं ।
उसने सैंकड़ों 'कान्फ़ीडेन्शियल' 'सीक्रेट पेपर्स' दिये फ़ाड़ ।
वह टेलिफ़ोन पर सभी परिचितों-अपरिचितों
को कुत्ता-सूयर-गधा रहा बकता ।
उसने बिजली की सभी ट्यूब्स को दिया तोड़ ।
उसने केलेंडर की सभी तारीखों को दिया
काट ।
और एक टाईपराइटर उठा कर सड़क पर फैंका ।
उसने अपने हाथों को रंग लिया नीला
नाक को लाल
पांवों को पीला
और वेस्टपेपर-बास्कट को सर पर रख लिया उल्टा ।

पुलबंगिश के मुखामल ज्योतिषी ने कहा
मृत्यु-रेखा तुम्हारे हाथ पर नहीं दर्ज

वह बदमाश चीलों की तरह सारे नगर में रहा घूमता
आसफ़ाली रोड पर उसने छः आदमियों को किया क़त्ल
बल्लीमारान् में एक गाय और सांड को उसने न करने दिया
संभोग
उसने मायों से उनके बच्चे लिये नोंच

उसने तमाम जवान लड़कियों की छातियां काट दीं।
उसने कई इमारतों को गिराया
कई इमारतों को लगाई आग ।
थक-हार कर चिल्ड्रन-पार्क में घुसकर उसने किया आत्मभोग ।
बच्चे उसके फ़ानूस को देखकर होते
रहे हैरान ।

ऊलजलूल

डरवे में बंद मुर्गी
करती हैं 'कूं'—'कूं'
शिकंजे में फंसा चूहा
करता है 'चूं—'चूं'
खुले खेत में गधे का बच्चा
रोता है एहूँ—एहूं
बस कूं—कूं, चूं—चूं, एहूँ - एहूँ
बस कूं—कूं, चूं - चूं, एहूँ—एहूँ
कूं—कूं, चूं - चूं, एहूँ—एहूं
कूं—कूं, चूं - चूं, एहुं—एहूं

असहमति

एक

टखनों पर उठाये भवन-मुण्ड नगर—भुजायें
उछालता है सूर्य के मृत—पुरुष पर खारी समुद्र
ठोंकता है क्षितिज के चीथड़ों पर २४ मीटर लम्बी कीलें
चांद की गर्म जांघों पर मसलता है अपनी छाती के खुरदुरे बाल
तस्मों से बांधकर आदि—इतिहास—पुरुष आदम—हव्वा
उन्हें खुली हवायों में खुला देता है लटका
तोड़ देता है सारे आकाश को पंद्रह अरब भागों में
एक भाग अपनी नाक पर बांध पाताल की अन्तिम—भूमि

में पहुंच कर लेता है आत्महत्या

बोरडम	बोरडम	बोरडम	बोरडम	विच

नहीं !

वाहलू	वाहलू	वाहलू	वाहलू	सर

नहीं ।

मादाम	मादाम	मादाम	मादाम	ओह

नहीं !

जाजा	ज़ाजा	जाज़ा	ज़ाजा	जा

नहीं !

दो

मेरा	है।	कमीना
बाप	क्योंकि	सूयर
कुत्ते का	वह है	गधा
पुत्र है।	हरामी	ज़नखा
यथार्थ	पाजी	हीज़ड़ा
यही	कुत्ता	नपुंसक

ोन

से गांव अब भी प्रिय है	। गांव ।
ह धूल—भरे लाल—गुलाबी चेहरे	। चेहरे ।
च्ची—कच्ची सड़कें सब ओर	। सड़कें ।
ले तालाब का किनारा	। तालाब ।
रिन्दे खुले आकाश में दौड़ते	। परिन्दे ।
गडंडियों पर तैरती जवान स्त्रियों की पंक्तियां	। स्त्रियां ।
तों पर मंडराती लोकगीतों की धुनें	। लोकगीत ।
्यें पर इश्क लड़ाते लड़के—लड़कियां	। इश्क ।

ार

. आत्म हत्या करने पर खर्च	४४५ रुपये
. अपने पिता को मरवाने के लिए १३ गुंडों का बुलवाया जाना	२६ रुपये
. ३७ लड़कियों का अग़वा	३७ रुपये
. शराब, अफ़ीम, गांजा, चर्स, पोस्त, कोकीन, भांग, १६८० हीजड़ों की शादी पर	१०१ रुपये
. बच्चों का जेब कतरना आदि शिक्षा हेतु	१०१० रुपये
. वैश्यालयों में स्त्रियों के स्थान मर्दों को बिठाना, ताकि स्त्रियां अब मर्दों के पास जायें	२२५ रुपये
कुल रक़म	१८४४ रुपये

जमा

कागजों—पेंसिलों का खर्च	८ रुपये

उसको चाहियें अब केवल रुपये १८५२

पांच

पठानकोट से नई देहली तक रेल—सफ़र (श्रीनगर एक्सप्रेस)

१. पठानकोट　　२. मुकेरियां　　३. जालन्धर

४. जालंधर छावनी　　५. लुधियाना　　६. राजपुरा

७. अम्बाला छावनी　　८. कुरूक्षेत्र　　९. करनाल

१०. पानीपत　　११. सोनीपत　　१२. नरेला

१३. सब्ज़ी मंडी　　१४. नई देहली

यहां सब को उतरना होता है प्लेटफ़ार्म पर

छः

टमाटर	मूली	गाज़र	गोभी	प्याज़
संगतरे	केले	सेब	अमरूद	आम
आलू	पालक	शिमला मिर्च	बेंगन	भिंडी
पोदीना	धनिया	मटर	अदरक	लहसुन

सात

नेशनल—मलेरिया—इरेडिकेशन—प्रोग्राम

३.११.६२	४.५.६४	२२.१२.६५
१२.१.६३	३०.७.६४	६.४.६६
२५.३.६३	२२.९.६४	१६.६.६६
२१.६.६३	२.१.६५	१४.८.६६
१८.८.६३	१४.४.६५	७.१२.६६
६.१२.६३	११.६.६५	२३.२.६७
१०.२.६४	२७.१०.६५	

अमेरिकी सहायता । पी० एल० ४८०

वाशिंगटन । ओटावा । पेकिंग । लंदन । मास्को । ज़कार्ता । हनोई । ढाका । बर्लिन । रांवलपिंडी । पेरिस । कुवेत । तेहरान । रंगून । बग़दाद । केरो । नेरोबी । सायगोन । अंकारा । बेंकाक । दारेस्सलाम । स्टाकहाल्म । मेंडरिड। खरतूम । अदन । लिस्बन । वारसा । काठमंडू । रबात । एलबत्तर । काऊलालम्पुर । टोक्यो । रोम । डबलिन । बुडापेस्ट । होनोलुलु । एथेन्स । अक़रा । हेलसिंकी । अदीसाबाबा । हवाना । केनबरा । सोफ़िया । कोलंबो ।

१९९९ में होटल ड' ला ला

मेंढक भुना हुआ	चार रुपये
मेंढक उबला हुआ	तीन रुपये
मेंढक का मगज़	२.५० रुपये
मेंढक का गोश्त	१.५० ,, प्लेट
गधे कीं दुम	१.२५ ,, प्लेट

(दुम के सिवा गधे की और कोई चीज़ नहीं मिल सकती)

सांप का गोश्त	१.७५ रुपये प्लेट	
सांप का गोश्त (दही़वाला)	२.०० ,, ,,	
सांप का गोश्त (सागवाला)	२.०० ,, ,,	
सांप सालम (भुना हुआ)	७.५० ,,	(६ फ़ुट तक)
आदमी की टांग	३.५० ,,	
आदमी का दिल	१५.०० ,,	
आदमी का मग़ज़	३०.०० ,,	
आदमी का ख़ून	२.०० ,,	(१/१० किलोग्राम)
आदमी की चर्बी (सूप)	६.०० ,, प्लेट	
आदमी का गोश्त	२.५० ,, ,,	
आम की गुठलियों का भरथा	०.७५ ,, ,,	(गर्मियों में)
	८.०० ,, ,,	(सर्दियों में)
चपाती (वृक्ष के छिलके के गेहूं की)	०.५० ,, ,,	(एक)

विशेष

मक्खी की रीड की हड्डी	१७-५० रुपये प्लेट
गंदे नाले में चलने वाले कीड़ों की फ़िरनी	१२.०० ,, ,,
सांप की केंचुली	२२.०० ,, ,,
हरी-हरी घास की चटनी	०.७५ ,, ,,
मच्छर के फेफड़े	३०.०० ,, ,,
चूहे का शोरबा	३.५० ,, ,,
चमगादड़ की दो आंखें [सालम भुनी हुई]	पच्चीस रुपये
जंगली छिपकली [सालम भुनी हुई]	पच्चीस रुपये

[इसके अतिरिक्त अपनी पसंद का हमें आर्डर दें,
उसे अति शीघ्र अमल में लाया जायेगा]

नगर-बोध

मरे हुये शवों के बीच में से निकल एक व्यक्ति फैंकता है दरारों में
अपने लहूलुहान हाथ
विदेशी नग्न-चित्रों को देख उंडेलता है अपने सर पर गर्म चाय का
प्याला
कुछ तथाकथित प्रेमिकायों को पत्र लिख उन्हें चबाता है मुंह में बार-बार
कुछ तिलस्मी सांपों के फन बांधता है अपनी पसलियों से तावीज़ की तरह
मुर्दे घोड़ों का पी लेता है गर्म पेशाब
नथनों में नसवार चढ़ाकर प्रत्येक लड़की के पास छींकता है जाकर निरन्तर
नगर-मृत्यु के गुटके बेचता है चौकों में होकर खड़ा उल्टा
टाफ़ियां-सिग्रेट-ग्लूकोज़ बिस्कुट ख़रीद कर फैंक आता है उसी रेस्तरां
के महान—शौचालय में
दाद-खाज-खुजली की दवायें अपने जिस्म पर छिड़क कर अपने पिता
को देता है आशीर्वाद
सभी जनखों-हीजड़ों को बी.ओ ए.सी. के बोइंग—७८७ पर क़रता
है इकट्ठा
उनमें बांटता है वैश्यालयों से उठाये गये खून भरे कपड़े
अफ़ीम-शराब-कोकीन-गांजा सोये हुये बच्चों के मुंह पर देता है बांध
प्रत्येक कुत्ते-सूयर-गधे से पूछकर उसके घर का पता
पहुंचाता है वहां तक आतमभोग—धर्मग्रन्थ
अपने पेट में घुमाकर लहूलुहान हाथ खींचता है तमाम अंतड़ियां बाहर
सिनेमा-गेटों के बाहर जहां खड़े रहते हैं हमेशा असंख्य—व्यर्थ—लोग
लगाता है अपनी अंतड़ियों का बाजार
और जहां बैठे हैं बूटपालिश—मूंगफली वाले उन सबके बीच
चीख़ता है हज़ार बार नगर—बोध का नारा

यंत्रणा

एक भीड़ में से गुज़रना होता है पुलों के नीचे
अठारह सौ शताब्दियों का आक्रोश बांधता है बाईं ओर
कुछेक जन्मदाता चौंकते हैं शौचालयों में लगाते सेंध

ज़ोंक, कछुग्रा, वनमानस, रीछ हो सकते हैं जलूस
उच्च-स्तर के बौद्धिक प्रकाशित नग्न-चित्रों से कर सकते हैं तसल्ली
एक भैंस शहर के सेंट्रल-चौक में किसी भी मर्द के
साथ सो लेती है

हर कोई नहीं कुरेद पाता ग्रपनी पीठ पर मकान
चलती बस के टायरों पर विज्ञापन लाद कर पढ़ ज़ाना कठिन है
कम रोशनी में काफ़ी-हाऊस की मेज़ों पर ठिठुरना नहीं योग्यता
सड़क के मलवे पर गुज़रता हुग्रा हर व्यक्तित्व न्योरॉटिक
कपड़ा, कंक्रीट, पानी, लोहा, ग्रल्यूमीनियम (३६ मीटर प्रत्येक)
मन:समीक्षक, मानस-रोग विशेषज्ञ, भूचाल—विद्या—
विशेषज्ञ तथा भीड़ भीड़ भीड़ भीड़ भीड़
भीड़ भीड़ भीड़ भीड़ भीड़ भीड़ भीड़
समाचार पत्रों में लिपटी भीड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ी ड़

ग्रौर तपते हुये साढ़े बारह लाख सूर्य
बुद्धं शरणं

प्रथम पृष्ठ

नयी देहली, सोमवार १६ मई १९६६ बैसाख २६ शक सम्वत् १८२२

[बड़े-बड़े ग्रक्षरों में लिखा है 'नवभारत टाईम्स'। इसके दोनों ग्रोर २"×२" के दो विज्ञापन। एक, बायीं ग्रोर, छत्रपति शिवा जी बीड़ी। दूसरा दायीं ग्रोर, पारिवारिक उपयोग के लिये एल्युमिनियम के बर्तन।]

प्रथम कालम

दक्षिण वियतनामी फ़ौजों का दानांग पर कब्ज़ा। सैगोन में सरकार-विरोधी बौद्धों का ग्रान्दोलन पुनः भड़का [ये शब्द तीन कालमी साईज़ में]। एक नक्शा [एक कालमी साईज़], नक्शे में थाईलेंड-लाग्रोस-कम्बोदिया-दक्षिणी वियतनाम के क्षेत्र। कांग्रेस संसदीय चुनाव, सुरेन्द्र मोहन उपनेता निर्वाचित

[नयी देहली] । अधिकारियों द्वारा गोलीबारी के निशान मिटाने का प्रयत्न [नयी देहली]—दो कालमी साईज़ । दांतों से डूबते बालक की रक्षा की [केम्ब्ररले, इंगलेंड] ।

दूसरा कालम

उड़ीसा की स्थिति पर राज्यसभा में वहस [नयी देहली] । आदर्श रेल-यात्री (नयी देहली) । जेसलमेर में विदेशी बम मिला (ज़यपुर) । (वान्डनबर्ग, केलिफ़ोर्निया)—राष्ट्रीय उड्डयन व अंतरिक्ष प्रशासन (नासा) ने आज मौसम उपग्रह 'निम्ब्रस—१' छोड़ा जो चौबीस घंटे मौसम की जानकारी देता रहेगा ।

तीसरा कालम

सभी भारतीय देश की समस्यायें हल करने में जुट जायें (नयी देहली) । प० जर्मनी और ब्रिटेन २—२ गोल से बराबर (हेम्बर्ग) । (दो कालमी साईज़ शीर्षक)—इण्डोनेशिया मलेशिया से सीधी वार्ता को तैयार (यकर्ता) ।

चौथा कालम

चौथे, पांचवें और छठे कालमों के ऊपरी भाग में ६"×७" आकार में एक चित्र, नीचे लिखा है—नयी देहली के पालम हवाई अड्डे पर रविवार को लाओस के महाराज और महारानी को लाओस की महिलाओं ने पुष्पों के उपहार दिये । महाराज और महारानी यहां से होकर सोवियत संघ जारहे थे —(समाचार) लाओस नरेश रूस जाते हुये देहली से गुज़रे (नयी देहली) । देसाई द्वारा प्रशासन-सुधार में जन-सहयोग की अपील (नई देहली) । आगामी सूर्य-ग्रहण (नयी देहली) ।

पांचवां कालम

हज़ार नागा विद्रोही तोड़-फोड़ के लिए जमा [शिलांग]—दोकालमी साईज़ । कोसीगिन का पोर्ट सईद में भव्य-स्वागत [पोर्ट सईद] । लिन पियाओ माओ के उत्तराधिकारी बनेंगे [हांगकांग)—तीन कालमी साईज़ शीर्षक ।

छठा कालम

प्रधानमन्त्री उड़ीसा में सहायता-कार्यों से सन्तुष्ट [पदमपुर, संबलपुर ज़िला] श्रीमती गांधी उड़ीसा से देहली लौटीं (नई देहली) । कामराज द्वारा समाजवाद प्राप्त करने की अपील (नयी देहली)-दो कालमीं साईज़ ।

सातवां कालम

सातवें-आठवें कालम के ऊपरी भाग में शीर्षक—चीन से सम्मानजनक समझौता असंभव नही, भारत परमाणु अस्त्रों का स्वयं निर्माण करे, हिन्दू महासभा के अध्यक्ष श्री बनर्जी का भाषण (ग्वालियर) । शास्त्री जी की स्मृति में संगमरमर का घाट (करनाल) । पूना के डिप्टी मेयर गिरफ्तार [पूना] ।

आठवां कालम

कार्टून—'बाबू जी' । भारत ने फ्रांस को हराया (हेम्बर्ग) । चीन-पाक की चुनौती का सामना एकता से ही सम्भव (हिसार) । राजस्थान प्रदेश कांग्रेस का संकट (जयपुर) । नगर का मौसम ।

महानगर : सात माहौलुम

१.

पूसा इंस्टीच्यूट, ग्रेटर केलाश, नेशनल—
स्टेडियम,
यूनिवर्सिटी एन्कलेव, साऊथ एक्स्टेन्शन,
बारह टूटी, डिफ़ेन्स कालोनी, कश्मीरी गेट,
कालका जी. अजमेरी गेट,
गांधीनगर, नार्थ एवेन्यू, रामा कृष्णा पुरम,
फ़तेहपुरी, हौज़ खास पर
उतर आई है रात ।
सड़कों पर
अभी भी दौड़ती हैं बसें ।

२.

(क)

दूकानदार, दलाल, ग्राहक, लोग
ही लोग
बातें
शब्द
झगड़े
शोर
बच्चे, औरतें, मर्द ।
एक लम्बी गूंज———

(ख)

साईकल, रिक्शा, टेक्सी,
स्कूटर, कारें, थ्री व्हीलर, प्यादे, टांगे,
रेढ़ियां, ठेले, बसें———
बहुत लम्बी पंक्तियां———
चल, चल, चल———
हट हट, हट————
टन-न-न-न-न-न————
शूं-ऊं-ऊं-ऊं-ऊं-ऊं—————
फट-फट-ट-ट-ट-ट—————
वुर्त्त, वुर्त्त, वुर्त्त, वुर्त्त, दुर्त्त————

३.

कार्पोरेशन मेयर, चेयरमेन रिज़र्व बैंक,
सिटी ट्रेफ़िक कंट्रोलर, इंस्पेक्टर जनरल आफ़ पुलीस,
प्रधानमन्त्री, केबिनट के अन्य मन्त्री,
पोस्टमास्टर जनरल, डायरेक्टर इंटेलिजेन्स ब्यूरो,
संचालक आकाशवाणी, बेशुमार मैनेजर———
यह नहीं होते उपस्थित ।

इनके आधीन बहुत से लोग करते हैं काम
दफ़्तरों में ।

४.

होटल, रेस्तरां
सिनेमा
स्कूल
हस्पताल
न्यूज़पेपर-आफ़िसिज़ ———
बस-स्टापों पर खड़े रहते हैं लोग ।
शहर में से गुज़रते हुये
ला-तादाद पोस्टर पढ़ते हैं हम ।

५.

शहर में कुल १०८ हैं पार्क
हर पार्क का इतिहास है समान धर्मा
बूढ़े खेलते हैं शतरंज, बेकार लोग
जूआ, विद्यार्थी
क्रिकेट या फुटबाल या ताश
बच्चे आपस में झगड़ते हैं
औरतें सबका आकर्षण-केन्द्र हैं बनतीं
तेल-मालिश, गुब्बारे, दाल-चने
वाले
बेंचों पर बैठते हैं लगातार चीख़ते
भिखमंगे सारा दिन सोये रहते हैं ।

६.

ऐतिहासिक-स्थानों के बाहर-अन्दर
कचहरियों के अहातों में, जलसे-
जलूसों में
पुलों के नीचे, ऊपर

मजमे वालों के इर्द-गिर्द
सब तरफ़ हैं लोग ही लोग, लोग
ही लोग ।

७. (दो बजे : रात)

शहर की छतों के ऊपर
लाखों हैं चारपाइयां
सो रहे हैं लोग ।
ऊपर से गुज़रते हैं बार-बार
वायुयान ।
रेडियो-स्टेशन, रेलवे स्टेशन,
राष्ट्रपति-भवन,
सफ़दरजंग—एयरपोर्ट के ऊपर,
जलती हैं लाल बत्तियां ।
दूर किसी कॉलोनी में हो
रही है शादी ।
नीचे, गली क़ासिम-जान में
रो रहा है कुत्ता ।

महानगर : कई सन्दर्भ

यह सारा नगर प्रेमाक्षरों सहित अतीत से जुड़ा है अभी !
इस सारे नगर में रहते हैं ग़ैर-ज़िम्मेदार लोग !
अब पुरुष इतने क्यों हो गये हैं 'कोल्ड'
अब स्त्रियां शापिंग-स्थानों में क्यों लगाती हैं चक्कर सूचनार्थ !
यह सारा नगर क्यों हर समय बूढ़ा होकर चलता है !
यह सारे नगर के लोग क्यों कर लेते हैं हर बात बर्दाश्त !
यह सारा नगर सड़कों को रौंदता हुआ फिसलता है मकानों
को सर पर उठाये !
यह सारे नगर में क्यों सेक्स की बू फैली हुई है स्थान—स्थान !
व्यक्ति की हिवस कभी क्यों समाप्त नहीं हो जाती अचानक !
हर व्यक्ति किसी—न—किसी सीमा तक क्यों दार्शनिक है ।
बूट पहनना, बालों को संवारना, पार्कों में घूमना ....नगर

में आम बातें हैं !

नगर कोई विशेषता नहीं
नगर माने आवश्यकता है
जहां तमाम लोग होते हैं लगभग मूर्ख !
ऊलजलूल शब्दों के प्रचारक !

अतिक्रमण

१०६, १०७ १०८, १०९, ११०,
१११. ११२, ११३——
बहुत से लोग ऐसे हैं
जो अपना लिंग-रस गिलासों में निचोड़ कर
उसे चाटना चाहते हैं।

बाज़ार की हर दूकान पर टंगी ब्रेसरीज़ को देखकर
तुम हर औरत की छातियां क्यों तराशने लगते हो।
तुम्हें हर सजी-सजाई औरत क्यों नंगी नज़र आती है
तुम्हारा कहना है
औरत तबतक अस्वतंत्र रहेगी
जब तक औरत की बजाये आदमी को
बच्चा पैदा होना प्रारम्भ नहीं हो जाता।

हर औरत क्यों
पहले अपने पेट में बच्चा लाने को होती है तैयार
परन्तु जब उसे अपने गर्भाशय के फ़टने का होता है ख्याल
तो उसे क्यों होती है अबार्शन की आवश्यकता।

कोई भी औरत अपना मासिकधर्म बंद नहीं कर पाती
जब तक कि उसे आता रहता है 'पुरुष सत्ता' का विचार।
जैसे तुम अब वी. डी. के हो शिकार
फिर भी तुम्हें हर समय रहता है औरत का ख्याल
और हर समय तुम करते हो सोडमी पर बहस——
११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९,
१२०, १२१, १२२——

साम्यवाद : समाजवाद : पूंजीवाद : अराजकता

(श्याम परमार को समर्पित)

, , ,

, ,

;

,

,

,

;

,

,

, ;

,

, , ,

,

; ।

८४०००००० बिच्छु

| ल | ने अपना सर मुंडवा कर सर में गाड़ लीं आलपीनें

१९६६—१९६७/आऊट/लव/द्व लव/थ्री लव

५/१२+९/१७—१/२—६/३÷८/११=क़द्दू

एच० एस० एस० ड्रिल १/४", टी० एस० रीमर ३/१६", एम० एस० स्क्रयू ५/८"

एम० एस० ब्राईट स्ट्रिप्स ३.१/८" ओ० डी०×२० जी०

आई० आई० टी० फ्रेम-ट्यूब ५/८" ओ० डी०×२० जी०

आई० आई० टी० फ्रेम-ट्यूब ११/१६" ओ० डी०×२० जी०

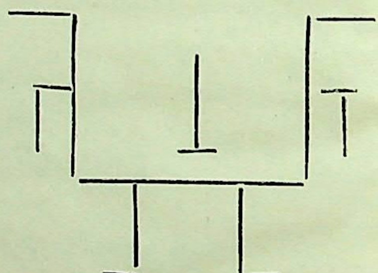
रेलवे स्टेशन पहुंचने पर | द | ने | प | को कहा सूयर

और लेवाटरी में घुस गया

卐 राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम

आक्रोश व्यर्थ है

नपुंसक होना है बेहतर



ए० और क० और अल्फ़ की एडजस्टमेंट

एरिस्टोक्रेट

कमलापति

अलीबाबा

डी०एम०के०

पंजाबी

तेलुगु

लूप । मीट्रिक सिस्टम । डा० जिवागो ।

शटाप ।

[भूत प्रेत, तिलस्मी-जादूई रूहें]
नहाना और गेहूं खाना एकदम मना ।

अमेरिका : अमेरिका

औरतें आदमियों से इसलिये अधिक सुखी हैं
कि उन्हें नहीं बनानी होती शेव । वैसे
हर व्यक्ति किसी हद तक निहायत बेवकूफ़ है ।
गुंडों का एक गुट शहर की तमाम छतों पर चढ़
बांटता है बच्चों में बम । बौने
लोगों की जमायत जा डूबती है चूहेदानों में ।
कमीने ।
सूयर ।
हरामी । पाजी ।
कुत्ते शहर में सरोम भौंकते हैं । स्त्रियां
अपने प्रत्येक अंग का मज़ाहरा हैं करतीं ।
लाखों लोग आत्महत्या करते हैं रोज़ । करोड़ों
नव-शिशु होते हैं पैदा । एक कौवा शहर
की सरहदों के ऊपर पीटता है नगाड़ा । जिन
लोगों को अनाज नहीं मिलता, अन्य लोग
उनको शीघ्र दफ़नाने का करते हैं प्रबन्ध ।
गाय का गोश्त नहीं हो सकता उत्तम । अधिकतर
वनमानस तंग सड़कों पर पतंग उड़ाना करते
हैं पसन्द । पार्कों में बैठ हरी घास चबाना विशेष
प्रबुद्ध होना है । एक नंगा पुरुष कारों के बीच
जब सड़क लांघता है, तो स्त्रियां आंखें बंद
करती हैं लगातार, पुरुष उसे समझते हैं नेत्रहीन ।
हर पुरुष क्यों सब स्त्रियों को काटना चाहता है ।
यदि कोई पुरूष हो जाता है अधिक सेक्सी,
तो उसके गले में ऊंट की दुम का बाल बांधा जाना

चाहिये, तमाम स्त्रियां सुनें ।
टेरिलीन की शर्ट सर्फ में धो डालो, और गांवों
की कच्ची सड़कों को करो पक्का । गांव में
भी जीवित रह सकते हैं आदम-हव्वा । आधुनिक
होना बुरा नहीं, परन्तु अत्याधुनिकता की ढोल
बजाना तथा शहरियत का दावेदार बनना है वर्जित ।
ग़ैर-ज़िम्मेदारी की कोई हद अवश्य होनी चाहिये ।
यदि बहुत से लोग अजन्ता-एलोरा-पुराने इतिहास में
दिलचस्पी नहीं लेते, तो इसमें ग़ल्ती अमेरिका की है
लोग बेईमान हैं, यह भी विशेष कारण है ।
कमरे और कूयें, इन दोनों की तुलना को सबसे
समझना है आज ।
पुल, औद्योगिक केन्द्र, रेलें, चिड़ियाघर ।

निहिलिज़्म

एक सूयर पैदा हुया ।
१० सुयर पैदा हुये ।
१०० सूयर पैदा हुये ।
१००० सूयर पैदा हुये ।
१००००० सूयर पैदा हुये ।
१०००००० सूयर पैदा हुये ।

सारा महानगर बन गया है सूयरों का बाड़ा



अकविता-समीक्षक की डायरी

१९५९ की समाप्ति के साथ ही नयी कविता की मृत्यु घोषित हुई। शमशेर बहादुरसिंह, धर्मवीर भारती, अज्ञेय, भारतभूषण अग्रवाल, गिरिजा कुमार माथुर, भवानी प्रसाद मिश्र, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना आदि नयी कविता के लेखकों की रचनायों को प्रबुद्ध पाठकों ने नकार दिया। अकविता का प्रारम्भ १९६५ से माना गया है। इस बीच के आन्दोलन यथा भूखी पीढ़ी, बीटनिक पीढ़ी, क्षुब्ध पीढ़ी, असन्तुष्ट पीढ़ी, हैदराबाद की दिगम्बर पीढ़ी आदि भी असाहित्यिकता तथा अगम्भीरता के शिकार होकर समाप्त हो गये। तथा हिन्दी-काव्य-साहित्य में ठहराव की स्थिति पैदा की अकविता ने।

— — — —

अकविता [illegible] में जो रचनायें प्रकाशित हुई हैं, उनमें से कई अकविता नहीं हैं, परन्तु अच्छी रचनाओं की कमी के कारण से ही ऐसी रचनायों को 'अकविता' में स्थान दिया गया। नयी-कविता के लेखक प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, भारत भूषण अग्रवाल भी 'अकविता' में प्रकाशित हुये, परन्तु इन लेखकों की वे रचनायें भी अकविता नहीं हैं, विमल ने भी सही मानों में आज तक एक भी अकविता नहीं लिखी। सही मानों में अकविता के श्रेष्ठ लेखक हैं—जगदीश चतुर्वेदी, सतीश जमाली, सौमित्र मोहन, श्याम परमार। [इनमें से तीन अकविता-लेखकों (जगदीश चतुर्वेदी, श्याम परमार, सतीश जमाली) की रचनायों के अनुवाद सान-फ्रांसिस्को (अमेरिका) से भी प्रकाशित हो रहे हैं।] अन्य श्रेष्ठ अकविता-लेखक हैं — राजीव सक्सेना, विष्णुचन्द्र शर्मा, कुमार विकल, नरेन्द्र धीर, चन्द्रकांत देवताले, बलराज पंडित, मणिका मोहिनी, अतुल भारद्वाज, रमेश साही, मोना गुलाटी। राजकमल चौधरी भूखी-पीढ़ी से अकविता की ओर आया है, वह अच्छी रचनायें देगा, ऐसा बहुत संभव है।

— — — —

'धर्मयुग' में दो लेख प्रकाशित हुए हैं—१. विद्रोह, विद्रोह, लेकिन किस लिए? २. हिन्दी काव्य की नयी दिशा : अकविता। इन दोनों के लेखक डा० रामदरश मिश्र तथा अजित कुमार अकविता की लोकप्रियता को देखकर नयी-कविता के तमाम लेखकों की तरह बौखला गये हैं, तथा इन दोनों ने 'कम समझ वाली' और बचकानी बातें की हैं जो कि केवल प्राध्यापकीय 'शरारत' हैं, साहित्यिक गतिविधि कदापि नहीं। अकविता पर कुछ भी कहने से पूर्व अकविता को समझना होगा, यह नितान्त आवश्यक है।

— — — —

आवश्यक

चंडीगढ़ (२० दिसम्बर, ६६) : अकविता पर बहस अभी ज्यादा ज़रूरी नहीं, अभी आवश्यकता है रचनात्मक स्तर पर ही अकविता को परिभाषित किया जाय। [तीसरा सप्तक समाप्त करके अज्ञेय ने ऐलान किया था कि कवि को आलोचक होना चाहिये। अकविता वाले इससे बचें———'प्रज्ञा' गोष्ठी में डा० नामवरसिंह।]

र० क०